6 आदमी का धर्म

एक नगर में एक धनी आदमी रहता था। उसके कोई संतान नहीं थी। एक दिन एक बालक घर के दरवाजे पर आया। उस समय वह आदमी अपने बरामदे में बैठा हुआ समाचार –पत्र पढ़ रहा था।

बालक : मुझे पाँच रुपये दे दो बाबा !

आदमी : इतने रुपये ?

बालक : हाँ बाबा! बीमार माँ के लिए दवा खरीदनी है।

आदमी : तुम्हारी जाति क्या है ?

बालक : मांगने वाले की क्या जाति हो सकती है, बाबा ?

आदमी : और धर्म ?

बालक : उसका धर्म भी नहीं होता।

आदमी : तो अपना नाम ही बताओ। मैं जान–पहचान बिना किसी को कुछ नहीं देता।

बालक : मेरा नाम भारत सिंह है।

आदमी : इतना अच्छा नाम! क्षत्रिय जान पड़ते हो।

बालक : नहीं। मैं केवल भारत हूँ। सिंह मेरी पहचान है।

आदमी : सिंह तुम्हारी पहचान है, सो कैसे ?

बालक : मैं भारत का निवासी हूँ इसलिए भारत हूँ। सिंह मेरे राष्ट्र का निशान है।

आदमी : अच्छा, अब समझा। तुमको भारत से प्रेम है। फिर मुझसे रुपये क्यों माँग रहे हो ? इतना बड़ा देश पड़ा है, कहीं भी जाकर माँग लो।

बालक : आप भी भारतीय हैं। मेरे पिता के समान हैं, इसलिए आपसे रुपये माँगने का मैंने साहस किया।

आदमी : बड़े बातूनी हो! ...मैं यों किसी को भीख नहीं देता।

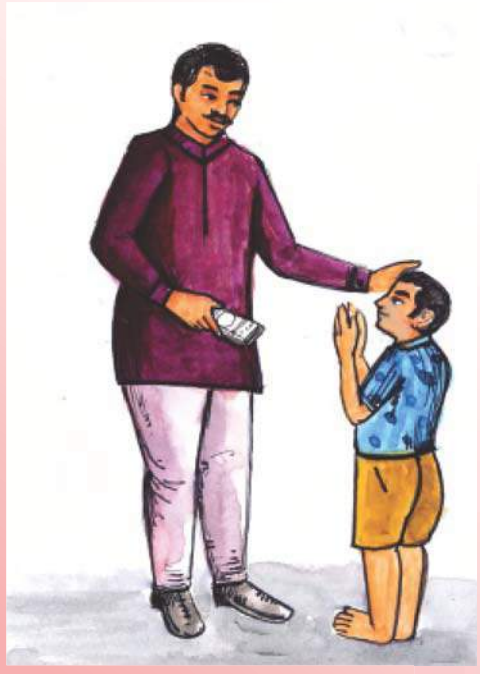

बालक : तो उधार ही दे दीजिए।

आदमी : उधार भी नहीं दे सकता, क्योंकि मैं तुम्हें पहचानता ही नहीं।

बालक : आप मुझ पर विश्वास कीजिए। माँ स्वस्थ हो जाएगी, तब मैं लौटा दूँगा।

आदमी : तो अपने पिता को भेजो।

बालक : वे इस दुनिया में नहीं रहे।

आदमी : तो क्या तुम एक अनाथ बालक हो ?

बालक : अनाथ मत कहिए बाबा! मेरी माँ मुझे पालती है।

आदमी : (रुपये निकालकर देता हुआ) अच्छा, ये लो पाँच रुपये। अब तुम इन्हें लौटाने मत आना।

बालक : नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता। माँ के ठीक होते ही लौटा दूँगा। विश्वास की रक्षा मेरा धर्म है।

आदमी : लेकिन तुम तो कहते थे कि तुम्हारा कोई धर्म नहीं।

बालक : बाबा! नाम वाला मेरा कोई धर्म नहीं। मैं मनुष्य के गुणों को ही धर्म मानता हूँ, जैसे–कर्त्तव्यपालन, प्रेम, ईमानदारी, दया, सत्य, सेवा।

आदमी : अरे बालक! छोटे मुँह बड़ी बात मत करो। यह धर्म नहीं है।

बालक : मैं जिस पाठशाला में पढ़ता हूँ, उसमें मेरे गुरु जी ने सब को यही सिखाया है। तभी से सबसे प्रेम करने को मैंने अपना धर्म माना है। सब की सेवा करना मेरा धर्म है।

आदमी : बालक! तुम्हारी बातें सुनकर मेरा हृदय सहज प्रेम से भर गया है। आज से तुम मेरे पुत्र के समान हो। जाओ माँ का इलाज कराओ। मेरी सेवा की जरूरत पड़े तो मुझे बुला ले जाना। सचमुच दया, प्रेम, करुणा, सत्य, सेवा, कर्त्तव्य–पालन ये ही मनुष्य के सबसे बड़े धर्म है। ईश्वर तुम्हारी माँ की रक्षा करें। (बालक जाता है।)

निर्देश :– इस पाठ को प्रस्तुत करते समय छात्रों को कर्त्तव्य पालन, प्रेम, दया, सत्य, सेवा आदि नैतिक गुणों के महत्त्व को बताएँ जिससे छात्र नैतिकता और अनैतिकता में भेद करना जानें और नैतिक बातों में उनकी रुचि उत्पन्न हो।

अभ्यास कार्य

शब्द–अर्थ

आवश्यकता	–	जरूरत
मुँहफट	–	अधिक बोलने वाला
साहस	–	हिम्मत
अनाथ	–	जिसके माता–पिता मर चुके हो
सहज	–	आसानी से

उच्चारण के लिए

आवश्यकता, सत्य, विश्वास, स्वस्थ

सोचें और बताएँ

1. बालक पैसे माँगने किसके पास गया ?
2. बालक उधार किसके लिए माँग रहा था ?
3. बालक ने अपना नाम क्या बताया ?

लिखें

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें

   (समाचार –पत्र, धनी आदमी, धर्म, अनाथ)

   (क) एक नगर में एक ..... रहता था।

   (ख) उस समय वह आदमी अपने बरामदे में बैठा हुआ ..... पढ़ रहा था।

   (ग) तो क्या तुम एक .....बालक हो ?

   (घ) मैं मनुष्य के गुणों को ही .....मानता हूँ।
2. बालक ने ऐसा क्यों कहा कि मेरा कोई धर्म नहीं है ?
3. बालक को उसके गुरुजी ने क्या सिखाया था ?
4. बालक और बाबा के बीच हुई मुख्य बातों को अपनी भाषा में लिखें।

5. धनी आदमी ने अन्त में क्या कहा?

भाषा की बात

- विलोम शब्द लिखें–

धर्म	–	अधर्म
सनाथ	–	.....
विश्वास	–	.....
सत्य	–	.....
स्वस्थ	–	.....

- अंतर बताओ

उठना	–	उठाना	चढ़ना	–	चढ़ाना
करना	–	करवाना	चलना	–	चलाना

यह भी करें–

- किसके द्वारा क्या कहा गया

बालक द्वारा	बाबा द्वारा
1.	1.
2.	2.
3.	3.

- उक्त पाठ के संवाद को अपने विद्यालय में आयोजित बालसभा, उत्सव आदि अवसर पर शिक्षक की सहायता से मंचन करें।
- आप पाठ के संवाद को मौखिक याद कर अपनी कक्षा में सुनाएँ।

पुस्तकों का मूल्य रत्नों से भी अधिक है क्योंकि इनमें वह शक्ति है जो अंतःकरण को उज्ज्वल करती है।

– महात्मा गांधी

पढ़ने के लिए

कबड्डी

जंगल में हो गए इकट्ठे थोड़े–से खरगोश,
लगे खेलने सभी कबड्डी, भर कर मन में जोश।
बढ़िया सा मैदान बनाया, रहें न कंकर–शूल,
महक रही थी उसमें केवल रेशम–जैसी धूल।

दिखा रहे थे सब आपस में अपने–अपने दाँव,
फुर्ती जो थी, कहीं किसी के नहीं उखड़ते पाँव।
कभी–कभी तो जोर–शोर से छिड़ जाता संघर्ष,
फिर पल भर में छा जाता सब के मुख पर हर्ष।

कोई पकड़ छोड़ देता है, कोई लेता घेर,
कोई गिरता ,कोई उठता, बिना लगाए देर।
हार–जीत का निर्णय करना, वहाँ न था आसान,
ऐसे ही खेलों से बढ़ती खेल–जगत की शान।